

## भारतीय महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति

पुष्पाजलि<sup>1a</sup>

<sup>a</sup>मैथोडिस्ट गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज रूड़की, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

### ABSTRACT

समाज में परिवर्तन लाने के लिये महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी, महिला सशक्तिकरण राज्य सरकार की प्राथमिकता है, एक महिला स्वस्थ होगी तो पूरा परिवार स्वस्थ रहेगा और परिवार स्वस्थ रहेगा तो समाज, राज्य व देश स्वस्थ भी होगा। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर समाज व सरकार जागरूक हो। स्त्रियों में मातृत्व सम्बन्धी समस्या प्रायः बचपन और प्रजननीय उम्र में खराब पोषण और स्वास्थ्य सुविधाओं को अनदेखा करना है। यद्यपि भारत की सरकार ने स्त्रियों की स्वास्थ्य, स्थिति, गरीबी, शिक्षा, स्त्रियों के प्रति हिंसा के विरुद्ध, लैंगिक भिन्नता आदि क्षेत्रों में विभिन्न कदम उठाये हैं परन्तु इस दिशा में और भी प्रयास होना आवश्यक है। प्रयास से साथ ही उस पर सार्थक अमल होना भी नितान्त आवश्यक है। प्रस्तुत शोध लेख में स्त्रियों की इन्हीं समस्याओं और उनके सन्दर्भ में किये प्रयासों का उल्लेख किया गया है।

**KEYWORDS:** स्वस्थ जीवन शैली, पौष्टिक का आहार, स्वास्थ्य सुविधाएँ व नीतियाँ

स्त्रियों के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ स्त्रियों का स्वास्थ्य मुख्यतया जैवकीय, सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्यों से प्रभावित होता है जैसे कि कम उम्र में शादी, अशिक्षा, असुरक्षित गर्भपात, गरीबी, अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ, माँ बनने की उम्र, लैंगिक विषमता कम शिक्षा शारीरिक शोषण, घरेलू हिंसा सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभाव व रोजगार के कम अवसर आदि। सामान्यतया यह माना जाता है कि स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में अधिक आयु जीती हैं। लेकिन इसका यह आशय नहीं है कि उनकी जीवन शैली उच्च श्रेणी की है। विभिन्न अध्ययनों के अनुसार स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में शारीरिक रूप से अधिक कमजोर व अयोग्य होती हैं। यह सुझाव दिया गया है कि जहाँ मातृत्व सुरक्षा की कमी होती है वहाँ स्त्रियाँ बहुत ही संवेदनशील होती हैं। असुरक्षित होती हैं। सामाजिक आर्थिक स्थिति में प्रचलित भिन्नता का मुख्य कारण स्त्रियों की कम उम्र में शादी व शिशु जन्मना है।

भारत में मातृत्व सम्बन्धी मृत्यु दर दुनिया भर में दूसरे सबसे ऊँचे स्तर पर है। देश में केवल 42: जन्मों की निगरानी पेशेवर स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा की जाती है। ज्यादातर महिलाएँ अपने बच्चे को जन्म देने के लिए परिवार की किसी महिला की मदद लेती हैं। जिसके पास अक्सर ना तो इस कार्य की जानकारी होती है और ना ही माँ की जिन्दगी खतरे में पड़ने पर उसे बचाने की सुविधाएँ मौजूद होती हैं। यूएनडीपी मानव विकास रिपोर्ट (1997) के अनुसार 88 प्रतिशत गर्भवती महिलाएँ 15 से 49 वर्ष की आयु में रक्त अल्पता (एनीमिया) से पीड़ित पायी गयी थी। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अज्ञानता के कारण औसतन महिलाओं के पास अपनी प्रजनन क्षमता पर थोड़ा या कोई नियन्त्रण नहीं होता। महिलाओं के पास परिवार नियोजन के सुरक्षित व आत्म नियन्त्रण तरीके उपलब्ध नहीं होते। जिसके कारण उन क्षेत्र की महिलाओं को अनेको स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अध्ययनों से ज्ञात होता है कि विभिन्न स्वयं सेवी संस्थाओं पॉलिसेी मेकर और अध्यापिकाओं ने

स्त्रियों की साक्षरता व गरीबों को दूर करने के लिए विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

**पोषणता की स्थिति** भारतीय महिलाओं की स्वास्थ्य व पोषण की स्थिति सांस्कृतिक व पारम्परिक परम्पराओं के कारण अत्यन्त दयनीय बन गयी है। विशेष रूप से उनके गर्भावस्था व दुग्धपान के समय। अध्ययन में यह पाया गया है कि ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की इस दौरान लिए गये आहार में मानक तत्व की कमी पायी गयी है। आमतौर पर कम वजन का शिशु माँ के कम पोषक भोजन व खराब स्वास्थ्य के कारण जन्म लेता है। रक्त अल्पता की बिमारी भी शिशु भी माँ को ज्यादा होती है बजाय किशोरी या गर्भावस्था युवती के। महामारी विज्ञान सम्बन्धी शोधो ने यह पाया है कि 50 प्रतिशत गर्भवती महिलाएँ एनीमिया (रक्त अल्पता) की बिमारी से पीड़ित हैं। गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य सम्बन्धी लापरवाही व पोषण सम्बन्धी अज्ञानता का दुष्परिणाम शिशु व माँ दोनों के ऊपर पड़ता है। उचित शिक्षा व अधिकार द्वारा इस दुष्परिणाम के प्रभाव से बचा जा सकता है। इस दिशा में निश्चित कदम उठाकर स्त्री को स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी का महत्व बताया जाना नितान्त आवश्यक है।

**घरेलू हिंसा व शारीरिक शोषण** महिलाओं में विभिन्न बिमारियों का कारण केवल उनकी लैंगिक विभिन्नता गरीबी, अशिक्षा, अज्ञानता ही नहीं है बल्कि घरेलू हिंसा व शारीरिक शोषण, शारीरिक हिंसा आदि भी है जो उनकी मातृत्व क्षमता, स्वायत्ता, जीवन शैली व शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डालती है। भारत में स्त्री व पुरुष दोनों का जन्म के समय एक जैसी ही जीवन प्रत्याशा होती है। आर्थिक सहायता, बुजुर्ग होने पर सुरक्षा जायदाद का उत्तराधिकारी और दहेज आदि। ये सभी धारणा पुत्र को प्राथमिकता देते हैं। हालांकि भारतीय सरकार ने इस विषमता को दूर करने के लिए अनेक सार्थक प्रयास किया है। अनिश्चित एवं अवैधानिक और

असुरक्षित गर्भपात ने स्त्रियों के स्वास्थ्य पर नाकारात्मक प्रभाव डाला है। ऐसी स्थिति को कम करके भारतीय स्त्रियों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य में सुधार किया जा सकता है। भारतीय महिलाओं के स्वास्थ्य और मनस पटल पर नाकारात्मक प्रभाव डालने में पति और सास का अत्याचार व हिंसा भी अहम भूमिका निभाते हैं। ऐसे बच्चे जो कम शिक्षित माँ से जन्म लेते हैं उन्हें अनेक पोषकीय कमी से उत्पन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। क्योंकि उन्हें उच्च पोषक तत्वों का ज्ञान नहीं होता।

**महिलाओं के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के सम्बन्ध में नीतियाँ और कार्यक्रम** उत्तराखण्ड एक पर्वतीय क्षेत्र है। अतः यहाँ की पर्वतीय क्षेत्र में रहने वाली महिलाओं को विशेष रूप से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को सामना करना पड़ता है। किन्तु सरकार ने इस प्रकार की समस्याओं से निजात पाने के अनेक प्रयास किया है। कुछ राज्य सरकारों ने ग्रामीण परिवारों के लिए 30 हजार से 50 हजार रुपये तक के स्मार्ट कार्ड जारी किये हैं और इसके साथ ही सरकारी प्रीमियम के खर्च पर स्वास्थ्य बीमा की व्यवस्था भी की है। जिसके तहत जरूरतमंद परिवार कहीं भी इलाज करवा सकते हैं। 1 फरवरी को प्रस्तुत आम बजट में गरीब परिवारों के लिए 5 लाख रुपये बीमा योजना गरीबों के लिए सराहनीय कदम है। सरकार द्वारा 24 जिलों के अस्पतालों को अपग्रेड करके मेडिकल कॉलेज खोलने का प्रस्ताव भी उल्लेखनीय है।

महिला सशक्तिकरण के 4 बिन्दुओं स्वास्थ्य, सुरक्षा, शिक्षा व आर्थिक स्वात्मन को ध्यान में रखते हुए वित्तमंत्री ने बजट 2016 में अनेक महत्वपूर्ण घोषणा की। गरीब परिवार के महिलाओं के नाम से एल0पी0जी0 कनैक्शन मुहैया कराने के लिए बजट में 2 हजार करोड़ रुपये की व्यवस्था की। स्वास्थ्य बीमा भी उनके लिए लाभकारी सिद्ध होगा। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय का उद्देश्य ही है कि हिंसा से मुक्त वातावरण में सम्मान के साथ रह रही तथा देश के विकास में पुरुषों के समान भागीदारी निभा रही सशक्त महिलाएँ और सुसंपोषित बच्चे जिन्हें शोषण मुक्त वातावरण में विकास एवं वृद्धि के अवसर प्राप्त हो। बजट 16-17 में भी एकीकृत बाल विकास स्कीम के तहत 16120 करोड़ रुपये आवंटित किये थे।

इसके अतिरिक्त तीन महत्वपूर्ण कारक स्त्रियों के स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता फैलाने में सहायक सिद्ध हुये हैं। **टेलीमेडिसिन, रोग कल्याण समिति एवं गैर सरकारी संगठन (N.G.O)**। टेली मेडिसिन के माध्यम से नेटवर्क के जरिये से उपचार की सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाती हैं। इसका लाभ ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा मिल सकता है। ग्रामीण उत्तर प्रदेश में W.H.P 116 टेली मेडिसिन क्लिनिक (Sky Clinic) 1993 से स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करवा रही है। इसी प्रकार रोग कल्याण समितियाँ 450 अस्पताल संचालित करती हैं। जिसके लिए विधायकगण फण्ड आदि की व्यवस्था करते हैं। यह विशेष रूप से मध्य प्रदेश में सफलता के शिखर पर है।

भारत में स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेक गैर सरकारी संगठन कार्य कर रही हैं। ऐसी ही एक सफल शाखा आशा ASHA है। जो अनेक नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य कर रही है यह उन कमजोर एवं अशिक्षित महिलाओं के मातृत्व सम्बन्धी प्राथमिक उपचार, शिशु के देखभाल, परिवार नियोजन, शारीरिक संक्रमण आदि क्षेत्रों में कार्य कर रही है।

### निष्कर्ष

महिलाओं के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के सम्बन्ध में अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि उनके जीवन से जुड़ी अनेक परेशानियाँ एवं मुद्दे हैं। जिन्हें देखने की आवश्यकता है। हालांकि सरकार द्वारा अनेको नीतियाँ और कार्यक्रम दिये गये हैं, परन्तु आम जागरूकता अति आवश्यक है। महिला उत्थान एवं मानवाधिकार की सुरक्षा हेतु निम्न बातों का होना आवश्यक है।

1- महिलाओं के लिए शिक्षा का प्रसार हो। जिसमें व्यवसायिक शिक्षा पर जो दिया जाये। 'बेटी बचाओ व बेटी पढ़ाओ'। 2-महिलाओं को तथा उनके शिशुओं को स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाये। 3-रोजगार के अवसर उपलब्ध करायी जाये। 4-वैधानिक संरक्षण व वैधानिक सेवा की सहायता एवं जानकारी उपलब्ध करायी जाये। 5-महिलाओं लिए सेवा शर्तों में शिथिलता के साथ ही अवकाश, पदोन्नति तथा प्रशिक्षण की सुविधा हो। 6-घरेलु हिंसा तथा अन्य हिंसा से नारी की सुरक्षा मानवता को पूर्णता प्रदान करती है। नारी अभ्युदय के लिए उनकी पहचान, उनका सम्मान एवं व्यवस्था के सभी क्षेत्र में उनके लिए गरिमामय स्थान सुरक्षित, संरक्षित और सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। अतः महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधा, उन्हें समय-समय पर पोषाहार, स्वच्छता आदि के विविध आयामों से अवगत कराने की भी आवश्यकता है, साथ ही महिलाओं को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने की भी आवश्यकता है। ऐसा करके ही सर्वश्रेष्ठ भारत की कल्पना की जा सकती है।

### सन्दर्भ

- Ginter Er. Simko V (2013) Women Live longer than men. Brast Lek Listy 114: 45-49
- Kalyani Menan – Sen, A.K. Shiva Kumar (2001) *Women in India*
- Onarhem KH. Bloom DE (2016) Economic Benefits of Investing in Women's Health : A Systemetic Review 11 (3)
- मीनाक्षी मेट्रो (2003) (हिन्दी अनु0) 'स्त्री अधिकारों को औचित्य साधन' दिल्ली, राजकमल
- सिंह निशांत (2005) *मानवाधिकार और महिलाएँ*, नयी दिल्ली, राधा पब्लिकेशन